मृच्छकटिकम् एक सामान्य परिचय

(1) लेखक–शूद्रक

(2) शूद्रक का वास्तविक नाम शिमुक या सिमुक।

(3) शूद्रक का समय प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व।

(4) शूद्रक की आयु 100 वर्ष 10 दिन थी।

(5) शूद्रक शिव और पार्वती के भक्त थे।

(6) शूद्रक की रीति वैदर्भी है।

(7) मृच्छकटिकम् काव्य प्रकरण (रूपक) विधा के अन्तर्गत है।

(8) मृच्छकटिकम् में 10 अङ्क हैं।

(9) मृच्छकटिकम् के मङ्गलाचरण में शिव जी को नमस्कार किया गया है।

(10) मृच्छकटिकम् का मङ्गलाचरण आशीर्वादात्मक एवं कथावस्तुनिर्देशात्मक है।

(11) मृच्छकटिकम् का अङ्गीरस शृङ्गार रस है।

(12) मृच्छकटिकम् का उपजीव्य भासकृत दरिद्रचारूदत्त है।

(13) मृच्छकटिकम् में कुल 380 श्लोक हैं।

(14) मृच्छकटिकम् का नायक चारुदत्त (धीरप्रशान्त)

(15) मृच्छकटिकम् की नायिका दो हैं–

(क) कुलजा (कुलीन) धूता

(ख) वेश्या (गणिका) – वसन्तसेना (प्रगल्भा नायिका)

(16) मृच्छकटिकम् का प्रतिनायक शकार (संस्थानक)

(17) मृच्छकटिकम् का अर्थ मिट्टी की गाड़ी है।

(18) मृच्छकटिकम् की पात्रसंख्या–

पुरुष पात्र – 24

स्त्री पात्र – 08

सूत्रधार और नटी को छोड़कर 30 पात्र माने जाते हैं।

(19) मृच्छकटिकम् का अङ्कनाम– श्लोक संख्या

प्रथम अङ्क	–	अलङ्कारन्यास	–58
द्वितीय अङ्क	–	द्यूतकर संवाहक	–20
तृतीय अङ्क	–	सन्धिच्छेद	–30
चतुर्थ अङ्क	–	मदनिका शर्विलक	–33
पञ्चम् अङ्क	–	दुर्दिन	–52
षष्ठ अङ्क	–	प्रवहण विपर्यय	–27
सप्तम् अङ्क	–	आर्यकापहरण	–09
अष्टम् अङ्क	–	वसन्तसेनामोचक	– 47
नवम् अङ्क	–	न्यायालय (व्यवहार)	–43
दशम् अङ्क	–	संहार (उपसंहार)	–61

= 380 कुल श्लोक

(20) चारुदत्त उज्जयिनी का रहने वाला गरीब ब्राह्मण है।

(21) चारुदत्त जन्म से ब्राह्मण परन्तु कर्म से सार्थवाह (व्यापारी)

(22) वसन्तेना उज्जयिनी की एक प्रसिद्ध गणिका थी।

(23) मृच्छकटिकम् में चारुदत्त और वसन्तसेना के पारस्परिक प्रेम का वर्णन है।

(24) धूता चारुदत्त की विवाहिता पत्नी थी।

(25) चारुदत्त और धूता के बच्चे का नाम रोहसेन था।

(26) मृच्छकटिकम् का विदूषक मैत्रेय है।

(27) मृच्छकटिकम् में चारुदत्त का परम् मित्र विदूषक मैत्रेय है।

(28) शकार राजा पालक का साला तथा वसन्तसेना से एकतरफा प्रेम करने वाला है।

(29) शर्विलक चोरी के कार्य में निपुण ब्राह्मण एवं वसन्तसेना की क्रीतदासी मदनिका का प्रेमी है।

(30) संवाहक चारुदत्त का पूर्व भृत्य है जो जुए में सब कुछ हार कर बौद्धभिक्षु बन जाता है।

(31) चारुदत्त के मित्र जूर्णवृद्ध द्वारा दिया गया शाल मैत्रेय लेकर आता है।

(32) मैत्रेय मातृवलि देने चौराहे पर रदनिका (चारुदत्त की दासी) के साथ जाता है इसलिए वह डरता है।

(33) विट् और चेट के साथ शकार द्वारा पीछा किये जाने पर वसन्तसेना चारुदत्त के घर में छिपती है।

(34) रात में शकार रदनिका को वसन्तसेना समझकर पकड़ लेता है। तब मैत्रेय शकार को मारने दौड़ता है।

(35) वसन्तसेना अपने आभूषण चारुदत्त के घर में रख देती है।

(36) वसन्तसेना के हाथी का नाम खुण्डमोदक है।

(37) चारुदत्त को रेभिल का सङ्गीत अत्यन्त पसन्द है।

(38) चारुदत्त के घर में वसन्तसेना के रखे हुए गहने शार्विलक चुरा लेता है।

(39) शर्विलक अपनी प्रेयसी मदनिका को गुलामी की जंजीर से छुड़ाने के लिए आभूषण चुराता है।

(40) धूता अपने पति को चोरी के कलंक से बचाने के लिए वसन्तसेना के पास रत्नावली नामक आभूषण भेजती है।

(41) राजा पालक द्वारा आर्यक को बन्दी बना लिया जाता है।

(42) वसन्तसेना धूता के आभूषण मैत्रेय के द्वारा वापस कर देती है।

(43) चारुदत्त वसन्तसेना को पुष्पकरण्डक नामक बगीचे में बुलवाता है।

(44) रोहसेन सोने की गाड़ी के लिए रोता है।

(45) आर्यक राजा पालक की कैद से भाग जाता है।

(46) वसन्तसेना भूलकर शकार की गाड़ी पर बैठ जाती है।

(47) शकार के प्रणय वचन को ठुकराने के कारण वसन्तसेना का गला दबा देता है जिससे वसन्तसेना मूर्च्छित हो जाती है।

(48) वसन्तसेना की हत्या का आरोप चारुदत्त पर लगाकर न्यायालय में मुकदमा करता है।

(49) वसन्तसेना की रक्षा बौद्धभिक्षु संवाहक करता है।

(50) चारुदत्त पर अभियोग चलता है विदूषक के पास वसन्तसेना के आभूषण मिलने के कारण चारुदत्त को फाँसी का दण्ड दिया जाता है।

(51) चारुदत्त की फाँसी के समय भिक्षु वसन्तसेना को लेकर आता है।

(52) शकार वध्यस्थल से इसलिए भागा क्योंकि वसन्तसेना की हत्या का आरोप झूठा लगाया था।

(53) पालक को मारकर आर्यक राजा बनता है।

(54) फाँसी की सजा शकार को सुनायी जाती है।

(55) मृच्छकटिकम् में सात प्राकृतों का प्रयोग है।

(क) शौरसेनी (ख) अवन्तिका

(ग) प्राच्या (घ) मागधी

(ङ) शकारी (च) चण्डाली

(छ) ढक्की

(56) छः पात्र संस्कृत बोलते हैं।

(क) चारुदत्त (ख) आर्यक

(ग) शर्विलक (घ) विट

(ङ) सूत्रधार (च) अधिकरणिक

(57) जुवा खेलने वालों में प्रमुख सभिक है।

(58) राजा पालक की रखैल शकार की बहन है।

(59) मृच्छकटिकम् के अनुसार चोरी के देवता कार्तिकेय हैं।

(60) चोरों के गुरु–

कनक शक्ति देवव्रत

ब्राह्मण्यदेव भास्करनन्दी

(61) शर्विलक के गुरु योगाचार्य हैं।

(62) योगरोचना नामक द्रव्य लगाने से कोई देख नहीं पाता।

(63) अङ्कवार वर्णन–

प्रथम (क) चारुदत्त की दरिद्रता का मार्मिक चित्रण

(ख) विट और चेट साहित शकार द्वारा वसन्त सेना का पीछा करना।

(ग) अन्धकार का लाभ उठाकर वसन्तसेना का चारुदत्त के घर में छिपना तथा अपने आभूषणों को न्यास के रूप में चारुदत्त के घर में छोड़ना।

द्वितीय (क) संवाहक का वसन्तसेना के पास जाना तथा उसे वसन्तसेना द्वारा ऋणमुक्त कराना।

(ख) जुवारी संवाहक का बौद्ध भिक्षु बन जाना। वसन्तसेना के हाथी द्वारा संवाहक पर आक्रमण तथा सेवक द्वारा संवाहक की रक्षा करना।

(ग) चारुदत्त उस सेवक को पुरस्कार के रूप में अपनी बहुमूल्य चादर देता है।

तृतीय (क) चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर शर्विलक द्वारा वसन्तसेना के आभूषणों को चुराना।

(ख) चोरी हुए आभूषणों के बदले में चारुदत्त की पत्नी धूता द्वारा अपनी बहुमूल्य रत्नमाला का दिया जाना।

चतुर्थ (क) शर्विलक द्वारा चोरी के आभूषणों से अपनी प्रेयसी मदनिका को वसन्तसेना के घर से मुक्त कराना तथा वधू के रूप में स्वीकार करना।

(ख) शर्विलक द्वारा अपने बन्दी मित्र आर्यक को छुड़ाने के लिए जाना।

(ग) रत्नमाला लेकर गये विदूषक द्वारा वसन्तसेना के विशाल भवन का अवलोकन करने का वर्णन है।

पञ्चम (क) वसन्तसेना द्वारा चारुदत्त के घर में रात बिताने का वर्णन।

(ख) वर्षाऋतु का वर्णन।

षष्ठ (क) रोहसेन द्वारा सोने की गाड़ी से खेलने की जिद्द करना जबकि दासी रदनिका मिट्टी की गाड़ी देती है।

(ख) उस समय वसन्तसेना अपने आभूषणों से गाड़ी भर देती है ऐसा वर्णन है।

(ग) भ्रमवश वसन्तसेना की गाड़ी के बदलने का वर्णन।

(घ) सिपाही चन्दनक द्वारा बन्दी आर्यक को अभयदान का वर्णन।

सप्तम् (क) आर्यक का चारुदत्त के पास पुष्पकरण्डक उद्यान में जाना और चारुदत्त द्वारा आर्यक के बंधन को कटवाने का वर्णन है।

अष्टम (क) शकार द्वारा पुष्पकरण्डक उद्यान में गला घोटना वसन्तसेना को मृत समझकर शकार द्वारा चारुदत्त पर झूठा अभियोग चलाने के लिए न्यायालय जाने का वर्णन।

(ख) वसन्तसेना का उपचार हेतु बौद्ध भिक्षु बौद्ध बिहार ले जाता है इसका वर्णन है।

नवम् (क) अपने पक्ष में निर्णय के लिए शकार न्यायाधीश को धमकी देता है इसका सम्यक वर्णन है।

(ख) वसन्तसेना की माता द्वारा दी गयी गवाही का वर्णन।

(ग) विदूषक के पास वसन्तसेना के आभूषणों के मिलने तथा चारुदत्त को फांसी की सजा का वर्णन है।

दशम (क) पालक को मार कर आर्यक के राजा बनने तथा चारुदत्त को फाँसी से मुक्ति का वर्णन।

(ख) वसन्तसेना को वधू पद प्राप्त होने का वर्णन है।